'We're prepared for asset quality contingency'

Explaining what went behind the ₹2,000 crore of equity raise announced last Friday, **V VAIDYANATHAN**, managing director (MD) & chief executive officer (CEO), IDFC First Bank, in a conference call with **Hamsini Karthik**, says the intention was to be prepared for growth, as well as any asset quality contingency from Covid-19. Edited excerpts:

Would it be fair to say that the money raised is for a Covid protection fund?
We have a strong business model. Our retail loan book has grown 30 per cent in the last one year and we feel this kind of growth can be sustained. Our CASA has grown by 157 per cent. These are strong numbers. But for growth, equity capital for a bank is the foundation. Also, we wanted to be prepared for the uncertainties from the Covid situation and deal with it from a position of strength. The fundraise would increase our CET-1 capital ratio by 200 basis points to 15.3 per cent.

Q&A

V VAIDYANATHAN
MD & CEO,
IDFC First Bank

How much of the decision is because of Covid?
As a banker, my first job is to be safe. If I see flu is in the air, I should first take insurance protection. This capital raise is like that insurance protection. The book value per share has come down from ₹31.8 to ₹30.4 because of this issue (down 4.5 per cent) but it's a small price to pay to breathe easy. The fundraise is despite the slow start on the loan book front. I am like Rahul Dravid — build a solid foundation first and then hit centuries. I don't want to hit a six on the first ball and get out by the sixth. Brick by brick, we are building the foundation. By being fully capitalised, we don't have to look at how much gas is in the tank; now the tank is full.

Why ICICI Prudential Life and other insurance companies...was it easier because you were heading that institution many years ago?
ICICI Prudential Life has been in touch with me since my Capital First days. It

sees the bank as Capital First 2.0. HDFC Life and Bajaj Allianz Life have also invested. IDFC is investing another ₹800 crore to keep its stake at 40 per cent. Warburg Pincus had a choice, but it chose to invest in us again. People with long investment horizons will find our bank an amazing opportunity. Ours is a simple bank. We take deposits and lend to good quality people; we don't do any complicated trades. We have outstanding corporate governance.

How has the bank's business fared during the lockdown?
Disbursements have hardly been anything in April. Things will be slow for sometime. You're spending nothing, nobody's earning any income out of you and when money is not circulating, nobody will make any money. As the lockdown gets lifted, little by little, the economy will start moving. Maybe your hair has overgrown, maybe your clothes are worn off; so you'll go to the salon or to the retailer. That will start pulling things little by little and eventually things will get into gear.

Was it only margin call trigger that forced you to sell some of your stake in the bank?
I had exercised ESOPs using a loan when Capital First was at ₹800 in 2018. I could have sold it then but didn't sell it for two years as I believed in what we are building. Again, recently I exercised ESOPs at ₹40 by a loan and kept the position on leverage thinking I'll simply sleep on it for five years and it will multiply from here.

बीएस बातचीत

बैंकर के तौर पर सुरक्षित रहना है पहला काम

आईडीएफसी फर्स्ट बैंक ने हाल में 2,000 करोड़ रुपये की इक्विटी पूंजी जुटाने की घोषणा की है। बैंक के एमडी एवं सीईओ **वी वैद्यनाथन** ने **हंसिनी कार्तिक** से बातचीत में कहा कि बैंक ने वृद्धि के लिए खुद को तैयार रखने और कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण परिसंपत्ति गुणवत्ता में किसी तरह के व्यवधान से निपटने के लिए यह पूंजी जुटाई है। पेश हैं मुख्य अंश:

क्या यह कहना उचित होगा कि जुटाई गई रकम कोविड सुरक्षा फंड के लिए है?

हमारा कारोबारी मॉडल काफी दमदार है। पिछले एक साल के दौरान हमारे खुदरा ऋण खाते में 30 फीसदी की वृद्धि हुई है और हमें लगता है कि यह वृद्धि बरकरार रह सकती है। हमारे सीएएसए में 157 फीसदी की वृद्धि हुई है। ये मजबूत आंकड़े हैं। लेकिन किसी बैंक की वृद्धि के लिए इक्विटी पूंजी उसकी बुनियाद होती है। साथ ही हम कोविड के कारण पैदा हुई अनिश्चितताओं से निपटने के लिए तैयार रहना चाहते थे। जुटाई गई रकम से हमारा सीईटी-1 पूंजी अनुपात 200 आधार अंक बढ़कर 15.3 फीसदी हो गया है।

यह निर्णय लेने में कोविड की कितनी भूमिका थी?

एक बैंकर के तौर पर मेरा पहला काम सुरक्षित रहना है। यदि हवा में मुझे कोई बुखार दिखता है तो मुझे सबसे पहले बीमा सुरक्षा लेना चाहिए। जुटाई गई पूंजी उसी बीमा सुरक्षा की तरह है। प्रति शेयर बुक वैल्यू 31.8 रुपये से करीब 4.5 फीसदी घटकर 30.4 रुपये रह गया है लेकिन आसानी से सांस लेने के लिए यह मामूली कीमत है।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ एवं अन्य बीमा कंपनियां बेहतर स्थिति में क्यों थी क्योंकि कुछ साल पहले आप उन संस्थानों का नेतृत्व कर रहे थे?

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ मेरे कैपिटल फर्स्ट के दिनों से ही संपर्क में रही है। उन्होंने इस बैंक को कैपिटल फर्स्ट 2.0 एचडीएफसी लाइफ के तौर पर देखते थे और बजाज आलियांज लाइफ ने भी निवेश किया है। आईडीएफसी अपनी हिस्सेदारी को 40 फीसदी पर बरकरार रखने के लिए 800 करोड़ रुपये का अतिरिक्त निवेश कर रही है। वारबर्ग पिंकस के पास एक विकल्प था लेकिन उसने हमारे यहां निवेश करना बेहतर समझा। दीर्घावधि निवेश के लिहाज से लोगों को हमारे बैंक में जबरदस्त अवसर दिखेंगे। हमारा कारोबार बिल्कुल सरल है। हम जमा लेते हैं और अच्छे लोगों को उधारी देते हैं। हमारा कोई जटिल कारोबार नहीं है। हमारा कंपनी प्रशासन भी बेहतरीन है।

लॉकडाउन के दौरान बैंक का कारोबार कैसे बेहतर रहा?

अप्रैल में ऋण वितरण लगभग नहीं के बराबर रहा। सुस्ती कुछ समय के लिए बरकरार रहेगी। हम कुछ भी खर्च नहीं कर रहे हैं, आपके अलावा कोई भी कुछ नहीं कमा रहा है और जब नकदी प्रवाह नहीं दिखेगा तो किसी भी कमाई नहीं हो पाएगी। धीरे-धीरे लॉकडाउन को हटाए जाने से अर्थव्यवस्था रफ्तार में आएगी। हो सकता है कि आपके बाल बढ़ गए होंगे, आपके कपड़े पुराने हो गए होंगे, तो आप सैलून जाएंगे अथवा खुदरा विक्रेताओं के पास खरीदारी करेंगे। उससे स्थिति सुधरेगी।

क्या लॉकडाउन के बढ़ाए जाने से बैंकिंग प्रणाली के सुधार में देरी होगी?

हां, कोविड के कारण बैंकिंग प्रणाली पीछे चली गई है। लेकिन सरकार ने काफी सक्रिया दिखाते हुए लॉकडाउन लागू करने की अच्छी पहल की है। आप अंदाजा नहीं लगा सकते कि लॉकडाउन नहीं होता तो कितने लाख लोग इस बीमारी से संक्रमित हो जाते। लेकिन अब धीरे-धीरे व्यवस्था को सुचारु करना चाहिए क्योंकि लोगों की वित्तीय स्थिति जल्द ही खराब हो सकती है।